E-Learning Study Material

By Prof (Dr) YADWENDRA SINGH
MAHARAJA COLLEGE, ARA
VKS UNIVERSITY, ARA, BIHAR

B.A Part 1st Economics Hons
Paper 1st

Highly Inelastic Demand
(अधिक बेलोचदार (माँग) :-

अधिक बेलोचदार माँग को हम बेलोच माँग की लोच भी कह सकते हैं। बेलोच माँग की लोच तब कही जाती है जबकि कीमत में होने वाले आनुपातिक परिवर्तन की अपेक्षा माँग में होने वाला आनुपातिक परिवर्तन बहुत कम होता है। उदाहरण के लिए यदि कीमत में 20 प्रतिशत का परिवर्तन होता है, तो माँग में मात्र 10 प्रतिशत का ही परिवर्तन हो पाता है। इस प्रकार की माँग की लोच आवश्यक वस्तुओं के सन्दर्भ में होती है। इसे निम्न रेखा-चित्र के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है :-

रेखा-चित्र द्वारा अधिकबेलोचदार माँग का चित्रण :-

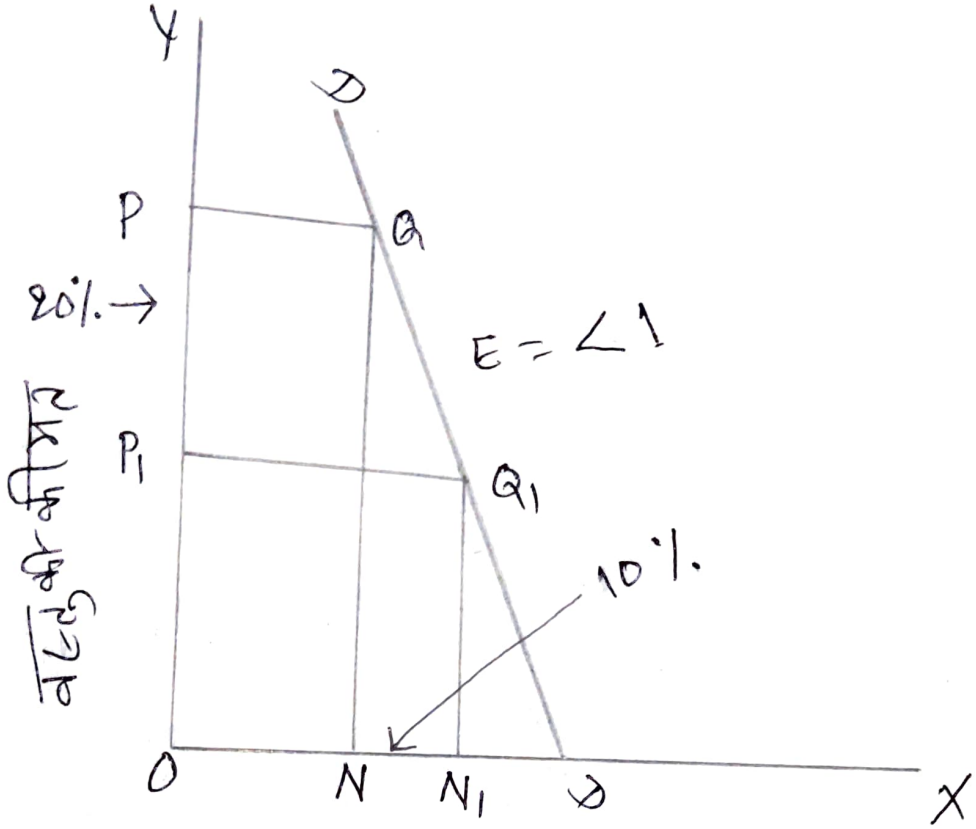

वस्तु की मात्रा

प्रस्तुत रेखा चित्र में DD रेखा बेलोच माँग की रेखा है। जब वस्तु की कीमत OP है तब वस्तु की माँग ON है। कीमत OP से गिरकर OP1 हो जाती है तो वस्तु की माँग ON से बढ़कर ON1 हो जाती है। इस रेखा चित्र में कीमत की कमी को P1P से दिखाया गया है और माँग की वृद्धि को NN1 से दिखाया गया है। कीमत की कमी और माँग की वृद्धि की आपस में तुलना करें तो स्पष्ट है कि कीमत की कमी P1P अधिक है माँग की वृद्धि NN1 से।

इस प्रकार की [redacted] स्थिति को हम बेलोच मांग की लोच कह सकते हैं। दूसरे शब्दों में, मांग की लोच $E = < 1$ है। अर्थात मांग की लोच इकाई से कम है।

(v) पूर्णतया बेलोच मांग की लोच (Perfectly Inelastic Demand) :- पूर्णतया बेलोच मांग की लोच का व्यवहार में कोई महत्व नहीं है। यह मांग की लोच पूर्णतया लोचदार मांग की लोच के समान काल्पनिक है। पूर्णतया बेलोच मांग की लोच तब कही जाती है, जब वस्तु की कीमत के परिवर्तनों का प्रभाव वस्तु की मांग पर नहीं होता है। कुछ अर्थशास्त्रियों का कहना है कि नमक के सम्बन्ध में ऐसी लोच हो सकती है, परन्तु इसके उत्तर में यह कहा जा सकता है कि यहाँ नमक का उदाहरण देना उचित नहीं है क्योंकि नमक की कीमत में वृद्धि हो जाने पर लोग नमक का उपयोग उस रूप या मात्रा में नहीं करेंगे जैसा कि कम कीमत रहने पर करते थे। कीमत बढ़ने पर नमक की बचाई, नीबू और काली मिर्च के साथ मिला कर उपयोग करना, जानवरों को पहले से कम खिलाना आदि बातों पर विशेष ध्यान दिया जाने लगेगा। यह एक व्यवहारिक बात है, सभी इस पर ध्यान देंगे। अतः पूर्णतया बेलोचदार मांग का सही

उदाहरण नमक नहीं है। पूर्णतया बेलोचदार माँग का भले ही व्यवहारिक महत्व नहीं हो फिर भी यह लोच बतलाती है कि एक दौर पर माँग की लोच शून्य हो सकती है। इसे निम्न रेखा चित्र के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है :-

रेखा - चित्र

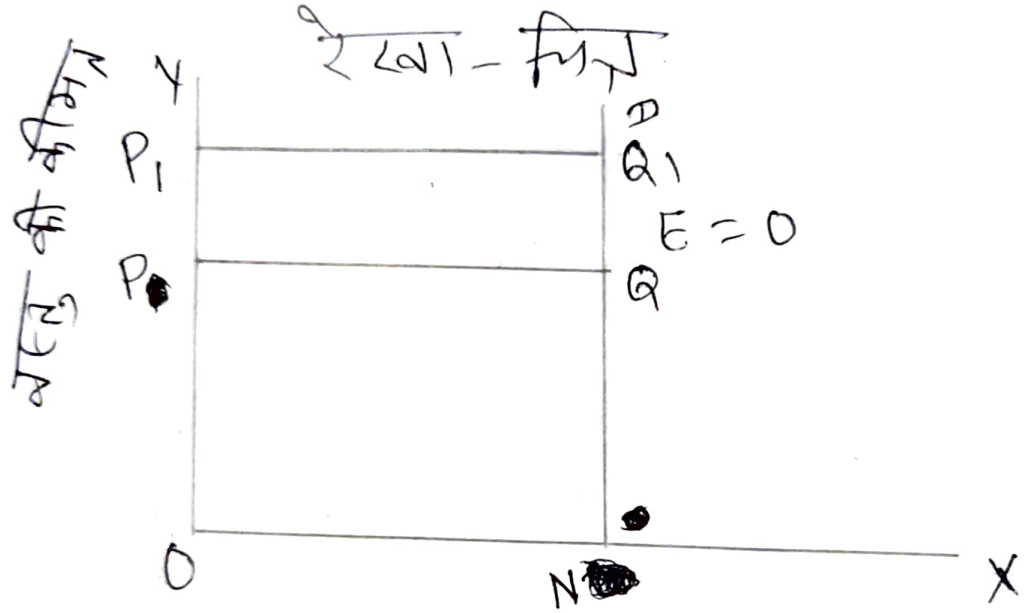

प्रस्तुत रेखा चित्र में DN पूर्णतया बेलोच माँग की रेखा है जो OX रेखा पर लम्बवत है। जब वस्तु की कीमत OP थी तो वस्तु की माँग ON थी। जब कीमत OP से बढ़ कर OP_1 हो जाती है या कीमत में प्रतिशत वृद्धि PP_1 के बराबर है तो भी वस्तु की माँग ON के बराबर ही है अर्थात कीमत बढ़ जाने पर भी वस्तु की माँग में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता है। यही कारण है कि इस स्थिति को पूर्णतया बेलोच माँग की लोच कहा जाता है। दूसरे शब्दों में E = 0 है।